भारत सरकार

पर्यटन मंत्रालय

राज्य सभा

लिखित प्रश्न सं. 945

गुरुवार, 27 जुलाई, 2023/05 श्रावण, 1945 (शक)

को दिया जाने वाला उत्तर

नए पर्यटन स्थलों का विकास

945 श्री के. आर. सुरेश रेड्डी:

क्या पर्यटन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार ने पर्यटन संभावना वाले क्षेत्रों की पहचान करने या नये स्थलों के विकास का सुझाव देने, वित्त और विपणन कार्यनीतियां बनाने, प्रशासनिक ढांचा विकसित करने, हितधारकों की पहचान करने, पारंपरिक पर्यटन को पर्यावरण-अनुकूल बनाने, संधारणीय पर्यटन के लिए विशिष्ट क्षेत्रों को विकसित करने और चिकित्सा, अवकाश, तटीय, वेलनेस, कृषि, व्यवसाय, सांस्कृतिक, तीर्थयात्रा, आध्यात्मिक, साहसिक, केरेवैन आदि जैसे विभिन्न प्रकारों के संयोजन वाले पर्यटनों को बढ़ावा देने की संभावना का विश्लेषण करने के लिए कोई पहल की है; और

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है, और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

उत्तर

पर्यटन मंत्री (श्री जी. किशन रेड्डी)

(क) और (ख): पर्यटक स्थलों की पहचान और विकास मुख्य रूप से राज्य सरकारों/संघ राज्यक्षेत्र प्रशासनों की जिम्मेदारी है। तथापि पर्यटन मंत्रालय 'स्वदेश दर्शन' तथा 'तीर्थस्थान जीर्णोद्धार एवं आध्यात्मिक विरासत संवर्धन अभियान सम्बन्धी राष्ट्रीय मिशन (प्रशाद) योजनाओं के अंतर्गत देश में विभिन्न पर्यटन गंतव्यों में पर्यटन सम्बन्धी अवसंरचना एवं सुविधाओं के विकास के लिए राज्य सरकारों/संघ राज्यक्षेत्र प्रशासनों को वित्तीय सहायता प्रदान करता है। स्वदेश दर्शन योजना के अंतर्गत 5303.64 करोड़ रु. की कुल राशि से कुल 76 परियोजनाओं को स्वीकृति दी गई है। प्रशाद योजना के अंतर्गत 1630.15 करोड़ रु. की कुल राशि से कुल 46 परियोजनाओं को स्वीकृति दी गई है।

पर्यटन मंत्रालय ने पर्यटक एवं गंतव्य केन्द्रित दृष्टिकोण अपनाते हुए स्थायी तथा जिम्मेदार पर्यटक गंतव्यों के विकास के उद्देश्य से अपनी स्वदेश दर्शन योजना को स्वदेश दर्शन 2.0 (एसडी 2.0) के रूप में परिवर्तित किया है। एसडी 2.0 के अंतर्गत 32 राज्यों/संघ राज्यक्षेत्रों में विकास हेतु कुल 55 गंतव्यों की पहचान की गई है।

इसके अतिरिक्त पर्यटन मंत्रालय अन्य के साथ-साथ थीमेटिक पर्यटन उत्पादों यथा निरोगता पर्यटन, एडवेंचर पर्यटन, एमआईसीई पर्यटन, आध्यात्मिक पर्यटन का समग्र रूप से संवर्धन करता है। मंत्रालय के सोशल मीडिया हैंडलों और आधिकारिक वेबसाइट के माध्यम से संवर्धन कार्य किए जाते हैं।

****